NEERAJ®

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन

(प्लेटो से मार्क्स तक)

Western Political Thought: Plato to Marx

M.P.S.E.-3

Chapter Wise Reference Book Including Solved Sample Papers

By: A Panel of Educationists

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Serving Education for Last 40 Years

Retail Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com**
Website: **www.neerajbooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Papers Only	*Typesetting by:* *Competent Computers*	*Printed at:* *Novelty Printer*

Notes:

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and up-to-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

Get Books by Post (Pay Cash on Delivery)

If you want to Buy NEERAJ BOOKS for IGNOU Courses then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com . where you can select your Required NEERAJ IGNOU BOOKS after seeing the Details of the Course, Name of the Book, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ IGNOU BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the Various "Special Discount Schemes" being offered by our Company at our Official website www.neerajbooks.com.

We also have "Cash of Delivery" facility where there is No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through "Cash on Delivery" service (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 3-4 days after we receive your order and it takes Nearly 4-5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 8-9 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006
Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

CONTENTS

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन
(प्लेटो से मार्क्स तक)
(Western Political Thought: Plato to Marx)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1
Question Paper—December, 2019 (Solved)	1
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1
Question Paper—December, 2011 (Solved)	1

क्रम सं. ***Chapterwise Reference Book*** *पृष्ठ संख्या*

1.	पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन का महत्त्व	1
2.	प्लेटो	8
3.	अरस्तू	30
4.	सेंट ऑगस्टाइन एवं सेंट थॉमस एक्विनास	54
5.	निकोलो मैकियावेली	69

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
6.	थॉमस हॉब्स	82
7.	जॉन लॉक	95
8.	जीन जेक्स रूसो	107
9.	एडमंड बर्क	120
10.	इमेनुअल काण्ट	125
11.	जेरमी बेंथम	131
12.	एलेक्सिम डि टॉकविल	142
13.	जे.एस. मिल	145
14.	जॉर्ज विलियम फ्रेडरिक हीगेल	157
15.	कार्ल मार्क्स	166

❐❐

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

Exam Held in

February – 2021

(Solved)

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक)

(Western Political Thought : Plato to Marx)

M.P.S.E.-3

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *(i) प्रत्येक भाग में से कम से कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

(ii) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग I

प्रश्न 1. पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तन के प्रमुख लक्षणों की पहचान कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-1, पृष्ठ 5, 'पश्चिमी राजनीतिक चिंतन, राजनीतिक संस्थाएं और राजनीतिक प्रक्रियाएं'

प्रश्न 2. अरस्तू के न्याय के सिद्धान्त पर टिप्पणी और चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-3, पृष्ठ 34, 'अरस्तू का न्याय संबंधी विचार'

प्रश्न 3. राज्य, सम्पत्ति और दासता पर सेंट ऑगस्टाइन के विचारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ 57, 'ऑगस्टाइन की राज्य और सरकार संबंधी धारणा', 'ऑगस्टाइन की सम्पत्ति संबंधी अवधारणा' तथा पृष्ठ 58, 'ऑगस्टाइन की दासता संबंधी अवधारणा'

प्रश्न 4. 'प्रिंस' में मैकियावली के विचारों की आलोचनात्मक चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-5, पृष्ठ 75, 'द प्रिन्स'

प्रश्न 5 हॉब्स की मानव प्रकृति और प्राकृतिक अधिकार की समझ का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-6, पृष्ठ 92, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-85, 'थॉमस हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था एवं प्राकृतिक अधिकार संबंधी अवधारणा'

भाग II

प्रश्न 6. धर्म पर टोकेविले के विचारों का वर्णन और परीक्षण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-12, पृष्ठ 142, 'परिचय', पृष्ठ 143, 'डि टॉकविल की धर्म संबंधी अवधारणा'

प्रश्न 7. जे.एस. मिल कैसे स्त्रियों के लिए समान अधिकार को उचित समायोजित ठहराते हैं?

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-13, पृष्ठ 145, 'प्रस्तावना' तथा पृष्ठ-150, 'मिल का महिलाओं की समानता संबंधी विचार'

प्रश्न 8. बेंथम के उपयोगितावाद सिद्धान्त के मूल लक्षणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-11, पृष्ठ 132, 'उपयोगितावाद के बुनियादी सिद्धान्त'

प्रश्न 9. बर्क के प्राकृतिक अधिकारों और सामाजिक अनुबन्ध की आलोचना की व्याख्या कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-9, पृष्ठ 122, 'बर्क की प्राकृतिक अधिकार एवं सामाजिक संविदा संबंधी अवधारणा', पृष्ठ 124, प्रश्न 2

प्रश्न 10. "समाज के आर्थिक ढाँचे का गठन उत्पादन के सम्बन्धों द्वारा होता है जो समाज का वास्तविक आधार है।" कार्ल मार्क्स के इस कथन को समझाइये।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-15, पृष्ठ 174, 'मार्क्स की क्रांति संबंधी अवधारणा', पृष्ठ 180, प्रश्न 7

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER
(December – 2019)

(Solved)

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन (प्लेटो से मार्क्स तक)
(Western Political Thought : Plato to Marx)

M.P.S.E.-3

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिये, प्रत्येक **भाग** में से कम से कम दो प्रश्न चुनिए। **सभी** प्रश्नों के **समान** अंक हैं।*

भाग अ

प्रश्न 1. राजनीतिक चिंतन राजनीतिक सिद्धान्त और राजनीतिक दर्शन से कैसे भिन्न है?

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-1, पृष्ठ 2, 'राजनीतिक चिंतन, राजनीतिक दर्शन और राजनीतिक सिद्धांत में अंतर'

प्रश्न 2. अरस्तू का सम्पत्ति और परिवार पर राय का परीक्षण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-3, पृष्ठ 37, 'अरस्तू की संपत्ति संबंधी धारणा', 'अरस्तू की परिवार संबंधी धारणा'

प्रश्न 3. चर्च और राज्य के बीच सम्बन्ध के बारे में संत थॉमस एक्वीनास की समझ की विवेचना कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-4, पृष्ठ 60, 'राज्य और चर्च के संबंध में थॉमस एक्विनास के विचार'

प्रश्न 4. संप्रभुतासम्पन्न राज के अधिकारों और कर्तव्यों पर थॉमस हॉब्स की राय का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-6, पृष्ठ 89, 'थॉमस हॉब्स के अनुसार राजा (शासक) के अधिकार एवं कर्त्तव्य'

प्रश्न 5 रूसो की नागरिक समाज की आलोचनात्मक चर्चा कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-8, पृष्ठ 109, 'नागरिक समाज की समालोचना संबंधी धारणा'

भाग ब

प्रश्न 6. सामाजिक संविदा और राज्य पर काण्ट के विचारों का वर्णन और मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-10, पृष्ठ 127, 'सम्पत्ति, सामाजिक संविदा एवं राज्य संबंधी काण्ट की अवधारणा'

प्रश्न 7. जेरेमी बेंथम द्वारा प्रतिपादित उपयोगितावाद सिद्धान्तों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-11, पृष्ठ 132, 'उपयोगितावाद के बुनियादी सिद्धांत'

प्रश्न 8. हीगल द्वारा स्थापित राज्य के सिद्धान्तों पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-14, पृष्ठ 162, प्रश्न 1, पृष्ठ 163, प्रश्न 2, पृष्ठ 164, प्रश्न 4 और प्रश्न 6, पृष्ठ 165, प्रश्न 7

प्रश्न 9. जे.एस. मिल द्वारा प्रतिपादित व्यक्तिगत अधिकार की महत्ता के रक्षा सम्बन्धी आधारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-13, पृष्ठ 146, 'मिल के स्वतंत्रता संबंधी विचार '

प्रश्न 10. मार्क्सवादी ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धान्त का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर संदर्भ देखें अध्याय-15, पृष्ठ 170, 'कार्ल मार्क्स की ऐतिहासिक भौतिकवाद की धारणा'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन

पश्चिमी राजनीतिक चिन्तन का महत्त्व

1

प्रस्तावना

मनुष्य का इतिहास यह स्पष्ट करता है कि राजनीतिक चिन्तन का क्रमिक विकास हुआ है। इनके अध्ययन से वर्तमान इतिहास की घटनाओं और समस्याओं को समझने में सहायता मिलती है। साथ ही हम राजनीतिक जीवन के मानदंड, राजनीतिक आचरण एवं राजनीतिक चेतना आदि की आधारभूत तत्त्वों से संबंधित अवधारणाएँ जो व्यवस्थित और किसी न किसी रूप में एक दूसरे से जुड़ी हुई है, के विकास की गति की जानकारी प्राप्त करते हैं। राजनीतिक चिंतन एक दिशा निर्देशक के रूप में कार्य करता है। इसके आधार पर नए समाज के निर्माण की रूप-रेखा को अंतिम रूप देने में सहायता मिलती है।

किसी भी आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के लिए इसके अध्ययन की प्रासंगिकता इस बात में है कि वे उसके प्रत्ययों, संकल्पनाओं, बनावट एवं भाषा आदि के ऐतिहासिक ढाँचे में काम करते हैं और यथानुरूप संज्ञानात्मक सामाजिक निस्ययकों से छनकर वे आधुनिक युग के राजनीतिक सिद्धांत के ताने-बाने में सहज ही समाहित हो जाते हैं। यह आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत के लिए प्रयोगशाला की भूमिका ही नहीं निभाता बल्कि एक परीक्षण स्थल भी है जहाँ विभिन्न राजनीतिक विचार जाँचे-परखे जाते हैं। राजनीतिक चिंतन की ऐतिहासिक विकास की विशेषताएँ, प्रवृत्तियों और नियम संगतियों का सर्वांगीण विश्लेषण और गहन सामान्यीकरण राज्य और विधि विषयक आधुनिक सैद्धांतिक ज्ञान के विकास एवं परिष्करण की युक्ति तथा प्रणालियों के पुर्वानुमान के लिए आवश्यक है। इसके माध्यम से राज्य तथा विधि विषयक कई सामान्य मामलों को सफलतापूर्वक हल किया जा सकता है।

आज की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति में प्रत्येक राजनीतिक सिद्धांत की संकल्पनाएँ नया अर्थ ग्रहण कर रही हैं। इस युग के ऐतिहासिक विचारकों का प्रत्यक्ष उद्देश्य अतीत में आधुनिक विचारों का भ्रूण खोजना होता है। इससे राजनीतिक सैद्धांतिक ज्ञान के मूल तत्वों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक कारक, राज्य की अवस्था, शक्ति का विभाजन, प्रतिनिधित्व के प्रकार तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंधित संरचनाओं व संस्थाओं इत्यादि के ज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास के नियमों को स्पष्ट करने की है ताकि मुख्य तथ्यों को प्रकाश में लाया जा सके।

इस प्रकार यह एक महत्वपूर्ण मानसिक व्यायाम है, जो राजनीतिक पहलू पर ध्यान केंद्रित कर राजनीतिक क्षेत्र में हमारे ज्ञान को परिपक्व बनाता है और राजनीतिक जीवन के सर्वोत्तम रूप के संबंध में वास्तविकता का अनुभव कराते हुए नवीन उत्साह, विषय के प्रति संचारित करता है। अत: यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक दर्शन अनेक कालों एवं महान विचारकों का परिमार्जित विवेक है।

www.neerajbooks.com

राजनीतिक चिंतन का अभिप्राय क्या है?

राजनीतिक चिंतन अतीत के ज्ञान, राजनीतिक संस्थाओं एवं पद्धतियों के साथ राज्य संबंधी मौलिक प्रश्नों पर सर्वमान्य-सिद्धांतों की एक विचार शृंखला है। यह व्यापक रूप में मनुष्य के राजनीतिक जीवन तथा विशिष्ट रूप में राज्य और सरकार का अध्ययन है। यह कहा जाता है कि इसका इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मनुष्यों के बीच पारस्परिक सहयोग के लिए किए गए प्रथम प्रयास। वेपर के अनुसार राजनीतिक चिंतन वह चिंतन है जिसका संबंध राज्य, राज्य के आकार राज्य के स्वभाव तथा राज्य के लक्ष्य से है। इसका मुख्य कार्य समाज में मानव का नैतिक पर्यवेक्षण करना है। इसका उद्देश्य राज्य के अस्तित्व, स्थिरता तथा नित्यता के विवरण प्रस्तुत करना ही नहीं है। वरन् राज्य क्या है और किसी को राजाज्ञा का पालन क्यों करना चाहिए, राज्य का कार्यक्षेत्र क्या है और कोई राजाज्ञा का उल्लंघन कब कर सकता है तथा राज्य के बिना अपूर्ण मानव की शक्ति क्या रह जाती है, इत्यादि का उत्तर देने के लिए यह चिरकाल से प्रयत्नशील है।

लेकिन यह इन प्रश्नों का कोई भी सर्वसम्मत उत्तर नहीं प्रदान कर सका क्योंकि राजनीतिक जीवन का उद्देश्य सामान्य जीवन से अलग नहीं है। अत: राजनीतिक चिंतन एवं राजनीतिक सिद्धांत के प्रश्नोत्तर अंतत: हमारे उचित-अनुचित की धारणाओं के धर्म-कांटे पर ही तौले जाते हैं। इसलिए राजनीतिक चिंतन नैतिक दर्शन की ही एक शाखा है। इसके मौलिक सिद्धांतों के विषय में सदा मतभेद रहा है और संभवत: सदा रहेगा क्योंकि इसमें विभिन्न राजनीतिक चिंतकों के विचारों-मूल्यों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन होता है और वह उस युग की परिस्थितियों के प्रति वास्तविकता के मूल्यांकन का तत्त्व लिए होता है। उसका मूल्यांकन समाज में क्रियाशील एक ऐसे व्यक्ति के मूल्यांकन होता है, जिसके विचार और भावनाएँ उसके जीवन की परिस्थितियों द्वारा निर्मित है।

इस प्रकार राजनीतिक चिंतन में पक्षधरता होती है। लेकिन यह राजनीतिक संघर्ष के साधन के साथ उसके समाधान एवं राजनीति के मुख्य तत्त्वों, यथा-समाज और राज्य के राजनीतिक गठन, उनकी नीति, शासन के स्वरूप विषयक अवधारणाएँ आदि इसके अनिवार्य घटक होते हैं। इसलिए राजनीतिक चिंतन अतीत और वर्तमान को जोड़ने वाली कड़ी ही नहीं बल्कि इसमें राजनीतिक सिद्धांतों का इतिहास और राज्य एवं विविध विषयक आधुकि सिद्धांतों के बीच अविच्छिन्नता बनाए रखने वाली शक्ति भी होती है। इससे राजनीति, राज्य और विधि से संबंधित प्रश्नों पर कारगर वैचारिक संघर्ष चलाने के लिए तर्कपूर्ण विपुल साहित्य की जानकारी प्राप्त होती है।

राजनीतिक चिंतन, राजनीतिक दर्शन और राजनीतिक सिद्धांत में अंतर

राजनीतिक विषयों पर गहन विचार-विमर्श एवं मीमांसा राजनीतिक चिंतन है। इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि युगों से इस पर चिंतन चल रहा है और प्रत्येक युग की सामान्य मानसिक पृष्ठभूमि की जानकारी मिलती है। भले ही प्राचीन काल में राजनीतिक चिंतन कम लोगों तक ही सीमित रहा, लेकिन राजनीतिक चिंतक व्यावहारिक राजनीति से दूर रह कर अपने युग की राजनीतिक समस्याओं तथा राजनीतिक व्यवस्थाओं का यथार्थ चित्र व्यवस्थित ढंग से लेखबद्ध करते हैं।

राजनीतिक चिंतन एवं राजनीतिक दर्शन शब्द का प्रयोग एक दूसरे के लिए किया जाता है। वैसे भी राजनीतिक दो शब्दों के मेल से बना है। राजनीति और दर्शन जिसमें दर्शन का अर्थ समग्रता का ज्ञान है। इसका प्रतिपाद्य विषय अखिल विश्व है, जिसका मौलिक और व्यापक विवेचन यह करता है। राज्य विश्व का एक अंग है, इसलिए दर्शन उसके मौलिक विषयों की विवेचना करता है। अत: राज्य से संबंधित इस दर्शन को राजनीतिक दर्शन कहा जाता है। स्मरणीय है कि राजनीतिक दर्शन का संबंध राजनीतिक संस्थाओं की अपेक्षा उन विचारों और आकांक्षाओं से है, जो उन समस्याओं में सन्निहित है। दूसरे शब्दों में राजनीतिक दर्शन का संबंध तथ्य कैसे घटित होता है, के वनिस्पत उस विवेचन से है कि क्या घटित होता है और क्यों घटित होता है। इस प्रकार राजनीतिक दर्शन राज्य की मूल समस्याओं पर विचार करता है तथा राज्य के अस्तित्व की व्याख्या प्रस्तुत करता है। यह स्वयं संस्थाओं का अध्ययन नहीं करता। इसके क्षेत्र में अंतर्गत राज्य की उत्पति, उसकी प्रकृति, अधिकार और कर्त्तव्य एवं राजनीतिक सत्ता की प्रकृति इत्यादि विषय सम्मिलित होते हैं। इसलिए राजनीतिक दर्शन मुख्यत: सैद्धांतिक है, क्रियात्मक नहीं। इसका संबंध सामान्य और व्यापक बातों से है न कि विशेष बातों से।

लेकिन राजनीतिक सिद्धांत वस्तुत: राजनीतिक परिस्थितियों के परिणाम होते हैं और वे राजनीतिक विकास के पीछे निहित उद्देश्यों के प्रतिबिम्ब होते हैं। राजनीतिक ज्ञान की समस्त पद्धति में अधिकांश सैद्धांतिक योगदान राजनीतिक सिद्धांतों द्वारा किया जाता है, जो राजनीति विषयक सैद्धांतिक प्रस्थापनाओं की एक निश्चित समिष्ट होते हैं। राजनीतिक सिद्धांत अपने युग में प्रचलित सामाजिक संबंधों की उपज होते हैं। इसमें राजनीतिक ज्ञान के निश्चित रूपों एवं अभिव्यक्तियों का व्यवस्थापन किया जाता है। इसमें राजनीतिक मान्यताओं, आकांक्षाओं तथा आदर्शों की संघनित अभिव्यक्ति मिलती है तथा किसी निश्चित सामाजिक समूह के दृष्टिकोण से किए गए मूल्यांकन प्रदर्शित होते हैं। राजनीतिक सिद्धांत राज्य के गठन, राजनीतिक सत्ता, राजनीति, सामाजिक-आर्थिक जीवन तथा राजनीतिक कार्य प्रणाली इत्यादि से संबंध रखने वाला सिद्धांत है। साथ ही राजनीतिक सिद्धांत में विधि की शाखाओं से संबंधित कतिपय ऐसे दृष्टिकोण का समावेश होता है जिन्होंने अपने काल को देखते हुए विश्व दृष्टिकोण जैसा सैद्धांतिक सामान्य राजनीतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया था।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

राजनीतिक चिंतन और राजनीति शास्त्र के मध्य संबंध

अनेक विचारक राज्य से संबंधित विचार व ज्ञान को राजनीतिक चिंतन की संज्ञा देते हैं। उनका तर्क है कि राजनीति शास्त्र राजनीतिक चिंतन का एक अंग है क्योंकि राजनीतिक चिंतन अखिल विश्व का अध्ययन करता है जबकि राजनीतिशास्त्र विश्व के सिर्फ राजनीतिक पहलू का। इसी तरह वे कहते हैं कि राजनीतिक चिंतन का प्रारंभ राजनीतिशास्त्र से पूर्व हुआ क्योंकि राजनीतिक चिंतन की मौलिक मान्यताओं पर ही राजनीति शास्त्र आधारित है। वस्तुत: राजनीतिक चिंतन राजनीति शास्त्र को आधार प्रदान करता है। राजनीतिक चिंतन के मंथन के बाद ही राजनीति शास्त्र को प्राप्त किया जाता है अर्थात् राजनीतिक चिंतन का संबंध उस विषय के आधारभूत सिद्धांतों तथा अनिवार्य लक्षणों से है, जो राजनीति शास्त्र के अध्ययन के क्षेत्र में आता है।

किन्तु राजनीतिक चिंतन राज्य संबंधी ज्ञान को पूर्णता नहीं प्रदान करता बल्कि कुछ हद तक यह उसके क्षेत्र को सीमित कर देता है जबकि राजनीति शास्त्र का वृहत सैद्धांतिक, व्यावहारिक या क्रियात्मक पक्ष है। इसके व्यावहारिक पक्ष के अंर्तगत सरकार के स्वरूप, सरकार के संचालन की विधियों, विधि निर्माण, कूटनीतिक संबंध, युद्ध, अंतर्राष्ट्रीय संबंध के समझौते इत्यादि के संचालन के लिए व्यक्तिगत रूप से राज्य का अध्ययन किया जाता है। राजनीतिक चिंतन इस व्यवहारिक पक्ष की विवेचना नहीं करता। इसका संबंध सिर्फ सैद्धांतिक एवं विचारात्मक पक्ष से है। इस प्रकार राजनीतिक चिंतन राजनीति शास्त्र का सीमित ज्ञान प्रस्तुत करता है।

इसके अतिरिक्त राजनीतिक चिंतन में एक अनिश्चितता का बोध होता है और उसमें राज्य की समस्याओं पर सिर्फ कल्पना के आधार पर विचार किया जाता है, जो वास्तविकता से दूर होती है। लेकिन राजनीति शास्त्र में सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक दोनों पहलुओं का अध्ययन किया जाता है और इससे व्यापकता का बोध होता है। इसमें आदर्श के साथ-साथ यथार्थ पर भी ध्यान दिया जाता है। शाश्वत के साथ-साथ समसामयिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है और सार्वभौम के साथ किसी घटना विशेष की भी विवेचना की जाती है।

राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा

राज्य व सरकार के संबंध में विचार-विमर्श राजनीतिक चिंतन का महत्वपूर्ण विषय रहा है। लेकिन राजनीतिक चिंतन के विकास में सामाजिक वातावरण एवं राजनीतिक परिस्थितियों का बहुत प्रभाव पड़ा। ज्यादातर राजनीतिक चिंतन का प्रादुर्भाव या तो तत्कालीन सत्ता की व्याख्या या उचित ठहराने या परिवर्तन की परिस्थितियों के सृजन के लिए हुआ। वैसे अनेक राजनीतिक विचारकों ने आदर्श के आधार पर भी राजनीतिक संस्थाओं का काल्पनिक चित्र अपने विचार के माध्यम से खींचा, जिसका उद्देश्य अपने युग की समस्याओं का समाधान था। इस प्रकार राजनीतिक चिंतन का मुख्य विषय-वस्तु राजनीति रही। वस्तुत: राज्य, समाज और मनुष्य के पारस्परिक संबंध राजनीतिक चिंतन के प्रमुख अंग रहे। अत: राजनीतिक चिंतन राजनीति का अध्ययन है।

राजनीति एक व्यापक मौलिक मानवीय क्रिया है। यह मनुष्यों के आपसी संबंधों का स्वभाविक परिणाम है। यह मानवीय क्रियाओं में सबसे अधिक मौलिक है तथा एक अनवरत व सदा परिवर्तनशील और सर्वव्यापी प्रक्रिया है। यह एक दशा को सुलझाने और उस संबंध में निर्णय लेने की क्रिया है। किन्तु यह विशेष स्थिति का परिणाम है। यह वैसे निर्णय लेने की प्रक्रिया से संबधित है जिसमें राजनीतिक कार्य निहित हैं। राजनीतिक क्रिया के संबंध में ओकशॉट लिखते हैं कि "यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें मनुष्य एक नागरिक समुदाय के सदस्य के रूप में परस्पर संबंधित होने के कारण अपने समुदाय की व्यवस्थाओं एवं दशाओं की उपयोगिता के संबंध में सोचते-समझते हैं, उनमें परिवर्तन लाने के लिए सुझाव देते हैं, प्रस्तावित सुझावों को स्वीकार करने के लिए दूसरे को मनाते हैं और परिवर्तनों को आगे बढ़ाने के लिए स्वयं उसके अनुकूल व्यवहार करते हैं।" डेविड इस्टर्न राजनीति को "मूल्यों के अधिकारिक विनियोजन (authoritative allocation of values) के लिए कार्य रूप में देखते हैं। हैराल्ड लॉसवेल और राबर्ट डॉल ने इसे शक्ति के प्रयोग का एक रूप कहा है और जीन ब्लॉन्डेल एवं हर्बर्ट साइमन आदि विद्वान राजनीतिक क्रिया की व्याख्या के लिए विनिश्चय निर्माण (Decision making) को माध्यम मानते हैं। अर्थात् यह एक सर्वव्यापक प्रक्रिया है और यह राजनीतिक चिंतन का मुख्य विषय है। यह अथाह एवं असीम सागर की तरह है जिसकी कोई दिशा निश्चित नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजनीतिक चिंतन बहुमुखी, व्यापक, अविरल और सुसंगत सिद्धांत निर्माण का प्रयास है। इसमें यद्यपि कुछ राजनीतिक विचारकों ने अपनी समकालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप अपने को सीमाबद्ध किया तथापि कुछ विचारकों ने उन सीमाओं को तोड़ने का प्रयास किया और उन्होंने कुछ ऐसे सिद्धांत व विचारों का सृजन किया जिसका महत्व सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक है।

राजनीतिक चिंतन के माध्यम से राजदार्शनिक, राजनीति की समस्याओं को देखने, समझने एवं सुलझाने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके राजनीतिक विचार तथा अधिकार तथा राज्य के प्रति उसके कर्त्तव्य एवं व्यक्ति की स्वतंत्रता, सरकार के स्वरूप, कानून, संप्रभुता आदि की विवेचना करना राजनीतिक चिंतक का काम है। राजनीतिक चिंतक सिर्फ तर्क के आधार पर ही नहीं बल्कि इतिहास के आधार पर भी अपने विचारों का सृजन करते हैं जिससे राजनीतिक क्षेत्र में ज्ञान वृद्धि के साथ मानव जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

उपर्युक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक चिंतन की रूप-रेखा का क्षेत्र बहुत व्यापक है। यह मानव जीवन के एक विशेष पहलू, राजनीतिक पहलू का संपूर्ण अध्ययन कर राजनीतिक प्रश्नों को समझने और उनके समाधान व भविष्य के दिशा का निर्धारण करने हेतु राजनीतिक सिद्धांत का निर्माण कर हमें दिव्य दृष्टि प्रदान करता है।

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन

पाश्चात्य राजदर्शन के विकास में यूनान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वैसे यूनानियों से पूर्व भी शासन एवं प्रजा का अस्तित्व था। लेकिन राजदर्शन के क्रमबद्ध वैज्ञानिक विश्लेषण का श्रेय इन्हें ही प्राप्त है। इसलिए यह कहा जा सकता है यूरोपीय सभ्यता एवं संस्कृति का स्रोत प्राचीन यूनान ही रहा और जीवन के प्रत्येक अंग में कम से कम पश्चिमी सभ्यता के लिए राजनीतिक संबंधों पर विचार-विमर्श के ज्ञान का आविर्भाव यूनान से हुआ। उन्होंने संसार को आश्चर्य भरी दृष्टि से देखा और अपने तार्किक बुद्धि एवं विवेक के आधार पर प्रत्येक आश्चर्य के मूल तत्त्व के विषय में जानकारी प्राप्त करनी चाही। जानने की उत्सुकता की भावना से दर्शन की उत्पत्ति हुई।

प्राचीन यूनानी पौराणिक आख्यानों तथा विश्वासों, जिन पर मिस्री एवं अन्य पूर्वी मिथकों का अधिक प्रभाव था, की तर्क बुद्धिपरक व्याख्या के प्रयास होमर और हेसियड की काव्य रचनाओं में मिलते हैं। उनमें देवताओं के नैतिक गुणों एवं लक्षणों का वर्णन है। लेकिन छठी शती ईसा पूर्व तक आते-आते विशेषत: थेलीज तथा सोलन के चिंतन में व्यवहारिक जीवन और राजनीति एवं विधि से भी संबंध रखने वाले तर्क संगत चिंतन का सृजन होने लगता है।

एथेंस के राजनीतिक-विधिक इतिहास में सोलन की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। राजनीतिक तथा विधि संबंधी धारणाओं का आगे विकास पाइथागोरस और सोफिस्ट विचारकों द्वारा किया गया। सोफिस्टों का उद्‌भव पाँचवी सदी ईसा पूर्व में हुआ, जब यूनानी लोकतंत्र अपने चरमोत्कर्ष पर था। उन्होंने ज्यादातर रुचि राजनीति, अधिकार और विधि में दिखायी।

सुकरात (469-399 ईसा पूर्व) सोफिस्टों के घोर विरोधी थे, लेकिन उन्हें सोफिस्टों के कई विचारों को अपनाना पड़ा और इस प्रकार सोफिस्ट विचारकों द्वारा प्रारंभ किये गये शिक्षा प्रसार के कार्य अपने ढंग से आगे बढ़ते रहे। सुकरात अपने पीछे कोई लिखित रचना नहीं छोड़ गए, किन्तु प्लेटो ने उनके जिन मौखिक संवादों का चर्चा की है, उनमें नैतिक दर्शन की आधारशिला रखी गई है। इस दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण भाग अधिकार, राजनीति और राज्य से संबंध रखता है। उन्होंने नैतिक आधार तत्त्व से मुक्त होकर नैतिक, राजनीति तथा विधि के वस्तुपरक स्वरूप के युक्तिसंगत, तार्किक, संकल्पना मूलक निरूपण पर ध्यान दिया तथा सुकरात नैतिक-राजनीतिक प्रश्नों की चर्चा को संकल्पनाओं तथा परिभाषाओं के स्तर पर ले आते हैं। प्लेटो और अरस्तु ने सुकरात की दार्शनिक तथा सैद्धांतिक उपलब्धियों को आगे बढ़ाया।

प्राचीन रोम में यूनानी विचारधारा के प्रभाव से कई अन्य राजनीतिक-विधिक चिंतन पद्धतियां विकसित हुईं। रोमन विधिक चिंतन की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि विधि शास्त्र का निर्माण है।

वस्तुत: प्लेटो और अरस्तु ने जिस क्रमबद्धता व क्षमता के साथ राजनीतिक सिद्धांतों का सृजन किया, उससे वे सार्वजनिक और सार्वदेशिक बन गए। इन्होंने ही सर्वप्रथम यह स्पष्ट किया कि व्यक्ति समाज में रहकर ही अपना विकास कर सकता है तथा व्यक्ति का समाज से पृथक कोई अस्तित्व नहीं है। इनका दृष्टिकोण व्यक्ति के जीवन के प्रति लौकिक और धर्मनिरपेक्ष था। प्लेटो के समक्ष ही संभवत: आदर्श राज्य की व्यवस्था का प्रश्न गंभीरता से उठा तथा सुकरात की हत्या की जो प्रतिक्रिया प्लेटो के मस्तिष्क में हुई उन्हीं से पश्चिमी राजनीतिक चिंतन या सिद्धांतो का जन्म हुआ।

प्लेटो और अरस्तु का चिंतन तात्कालिक सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों एवं पूर्व के यूनानी दार्शनिकों के विचारों से प्रभावित है। जो भावी राजनीतिक चिंतन का स्रोत बनी। किसी विशेष समय में प्रत्येक दर्शन का विकास होता है। फिर क्रिया-प्रतिक्रिया या वाद-विवाद से पाश्चात्य दर्शन विकसित हुआ। यथा-प्लेटो से अरस्तु, बेंथम से मिल, हीगेल से मार्क्स। प्रत्येक विचारक ने अपने पूर्व के राजनीतिक विचारों की आलोचना कर अपना विचार रखने का प्रयत्न किया जिससे पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन का विकास होता चला गया। फलत: संपूर्ण पश्चिमी राजनीतिक चिंतन का आरंभ ही प्लेटो और अरस्तु के विचारों से होता है। कहा जाता है कि पश्चिमी राजनीतिक चिंतन का प्रत्येक विचारक या तो प्लेटो का अनुयायी होता है या अरस्तु का। इस कथन में बहुत ही सच्चाई है। आज भी राजनीति विज्ञान के अध्ययन से ऐसा स्पष्ट होता है कि ऐसी बहुत कम चीजे हैं, जो यूनानी विचारधारा के इन दोनों विचारकों के उत्कर्ष काल में नहीं थीं, अंतर विस्तार का है। मूल रूप से प्राय: सारे तत्त्व पश्चिमी राजनीतिक चिंतन के इन दिग्गज दार्शनिकों में मिल जाते हैं।

पश्चिमी राजनीतिक चिंतन, राजनीतिक संस्थाएँ एवं राजनीतिक प्रक्रियाएं

सामाजिक राजनीतिक संस्थाओं एवं उनसे संबंधित प्रक्रिया की दृष्टि से पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन का अपना एक अलग स्थान है। यूनानी विचारकों ने नगर राज्य की संस्थाओं के संबंध में चिंतन प्रारंभ किया। इन राजनीतिक आदर्शों में न्याय, स्वतंत्रता संवैधानिक शासन और विधि के प्रति सम्मान प्रमुख है। फिर मनुष्य सबसे अधिक व्यापक एवं शक्तिशाली संस्था राज्य की अपनी बुद्धि से समीक्षा करने लगा। राज्य के विषय में वह सचेत हो उठा और राजनीतिक संस्थाओं के स्वरूप एवं प्रकृति की व्याख्या करने लगा।

www.neerajbooks.com